September 2014
TODAY
(NEWSLETTER OF EURASIA REIYUKAI)
Year : 2, Vol. 15
www.eurasiareiyukai.com

पूर्वजों को घर का केन्द्रविन्दु मानकर जीवनयापन

श्री युशुन मासुनागा
संस्थापक अध्यक्ष यूराशिया रेयूकाई

"महान रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास कर परिणाम का प्रतिफल दिखायें"

महागुरु किमी कोतानी जी की सत्यवाणी के अनुसार "शिक्षा अध्ययन की बात रहने पर भी रेयूकाई शिक्षा अभ्यास है"। इस बात को अंतरात्मा से महसूस करते हुए सभी के साथ रहने वाले हीरा जैसे महत्वपूर्ण खजाने को चमकाने के लिए अपने व्यवहार में रेयूकाई शिक्षा को उतारकर अच्छे परिणामों का स्वागत करने का अवसर प्राप्त करना होगा। वह हीरे जैसा महत्वपूर्ण खजाना कृतज्ञता है। यही रेयूकाई शिक्षा का आधार है। इसका कार्यान्वयन कर, क्षमा की भावना जागृत कर चलायमान होने का मौका प्राप्त करना होगा।

गुरु आन् र्यू ग्यो तोकु जेन् शी जी के मार्गनिर्देशन अनुसार "रेयूकाई शिक्षा को विश्व के समस्त मानवप्राणी में फैलाकर सभी जीवात्माओं के लिए कार्य कर सकने के कारण भगवान बुद्ध का संरक्षण प्राप्त कर सकते हैं।" इस बात को महसूस कर रेयूकाई शिक्षा होने के कारण सीमाविहीन यूराशिया रेयूकाई संस्था है। यह संस्था होने के कारण हम अपनी पूर्व योनि के कर्मों के सम्बन्ध अनुसार इस योनि में कल्पौं-कल्प की अवधि में विरले ही प्राप्त हो सकने वाली इस रेयूकाई शिक्षा में अभ्यास करने का महान् मौका प्राप्त कर रहे हैं। इस बात के प्रति कृतज्ञ होकर पाप का परिशोधन कर कर्म के सम्बन्धों को बचाने वाली शिक्षा में अभ्यास कर बुस्सोगोनेन के पूर्वजस्मरण को कार्यान्वयन करने का मौका प्राप्त कर रहे हैं।

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा समय-समय पर ग्रहण करने वाले मार्गनिर्देशनों को उपायकौशल्य एवं दूरदर्शिता अपनाते हुए कार्यान्वयन करने का मौका प्राप्त कर रहे हैं, कोई भी कार्य कामना से शुरुआत करने का मौका प्राप्त कर रहे हैं। वर्तमान संसार को बचाकर रखने के लिए शिक्षा का कार्यान्वयन करने में पूर्वजस्मरण कार्य में लगकर असंख्य पूर्वजों की आत्मा को बचाने का मौका पाकर वास्तविक परिणाम को दिखाना होगा। "गंभीर हेतुफल के सिद्धान्त में विश्वास कर, एकवाद में सम्पूर्ण विश्वास करते हुए बुद्ध की अमरता का ज्ञान रखना" ही रेयूकाई शिक्षा है। इस बात को हृदयंगम कर यूराशिया महाद्वीप भर में सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का फूल खिलाने के लिए महायान की भावना लेकर लोकहितकारी बोधिसत्व की जिम्मेवारी-कर्तव्य पूरा करने के लिए मिचिबिकी करने का मौका प्राप्त नहीं करने से नहीं होगा। आध्यात्मिक संसार के प्रति शत-प्रतिशत विश्वास कर आंखों से नहीं दिखने वाले संसार के अस्तित्व को बचाकर रखने के लिए हम प्रत्येक जन एकजुट व एकताबद्ध होकर कार्यान्वयन करने का मौका प्राप्त करना होगा ।

यूराशिया रेयूकाई किसी भी जाति, धर्म, लिंग और सम्प्रदाय में भेदभाव नहीं रखते हुए समानता की भावना रखती है । हमारे जीवन के श्रोत पूर्वजों की आत्मा को बचाकर रखने के लिए पूर्वजस्मरण, कार्मिक सम्बन्धों का शुद्धिकरण और पापों का परिशोधन कर प्रायश्चित करने के अभ्यासों का कार्यान्वयन करने का हम महान् मौका प्राप्त कर रहे हैं। संस्थापक अध्यक्ष जी के मार्गनिदेशन अनुसार महिला जमीन है एवं पुरुष खम्भा। अर्थात् जमीन सुदृढ रही तो खम्भा मजबूती से टिका रहेगा। ऐसा हो ने मात्र से ही देश की स्थिति सुदृढ हो सकती है। समाज में रहने वाले सभी लोगों को एकजुट होकर युवाओं को आशा और उत्साह लेने में लगाकर अपने देश का भाग्य परिवर्तन करते हुए, देशभक्ति की भावना जागृत कराते हुए, उन्हें उत्साहित करना पडेगा। रेयूकाई शिक्षा और समाज विकास एक ही रथ के दो पहियों के समान हैं। अर्थात् रेयूकाई शिक्षा का कार्यान्वयन कर सभी के साथ हाथों में हाथ डालकर समाज विकास के कार्य में आगे बढना हम सब की जिम्मेवारी और कर्तव्य है।

शिक्षा सिक्कोबु श्री जीवन कुमार जोशी

मिलियन अभियान का कार्यान्वयन करने के लिए यूराशिया रेयूकाई के सभी एक-एक जन को सदस्यों के साथ-साथ चलना पडेगा एवं अपने हाथ से सोकाइम्यो लिखने का मौका पाकर सदस्यों के घर-घर में पूर्वज प्रतीक का स्वागत करने में लगाना होगा। इसके बाद सात दिनों तक सदस्यों के साथ-साथ नीलसूत्र का पाठ करने का मौका प्राप्त करें। भूतकाल के पूर्वजों को वर्तमान में लाने के लिए सम्पूर्ण सदस्यों को कम से कम ३०० पूर्वजों की नामावली संकलन करने में लगाकर, उनका होम्यो लिखकर पूर्वजवही में विराजमान कराकर रेयूकाई शिक्षा आधारित जीवनयापन करने का मौका पाकर दो हाथ जोडने के स्वरुप वाला एक आनंदित घर बनायें। सम्पूर्ण सदस्यों को मिचिबिकी का पुण्यफल संचित करने में लगाने का कार्य ही मिलियन अभियान है। इसका प्रारंभिक चरण ३ वर्ष (१००० दिन) का अभ्यास है। इस अभ्यास में इस वर्ष सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र के १४वें अध्याय का कार्यान्वयन करने का मौका प्राप्त कर, आज का स्वयं बनाकर आगामी १८ नवम्बर २०१४ को महागुरु काकुतारो कुबो जी की ७१वीं पुण्यतिथि के स्मरण समारोह में एवं यूराशिया रेयूकाई के भव्य मिलन समारोह में खुशी का परिणाम लेकर उत्साह के साथ सहभागी बनें।

भारत का ६८वां स्वाधीनता दिवस समारोह संपन्न

यूराशिया रेयूकाई प्रधान कार्यालय सिलीगुडी के तत्वावधान में १५ अगस्त २०१४ के दिन भारत के ६८वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बाल नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त समारोह में प्रमुख अतिथि के रुप में महाकवि श्री मोहन दुखुन के कर-कमलों द्वारा राष्ट्रीय ध्वजोत्तोलन कर राष्ट्रीय गान एवं ओदाइमोकु से समारोह का शुभारंभ किया गया ।

कार्यक्रम के दूसरे चरणों में आयोजित बाल नृत्य प्रतियोगिता में सिलीगुडी क्षेत्र के आस-पास के संघ-संस्थाओं एवं नृत्य प्रशिक्षण प्रतिष्ठानों के बाल कलाकारों ने भाग लिया। उक्त प्रतियोगिता में एकल तथा सामूहिक रुप में उत्कृष्ट प्रस्तुति देने वाले कलाकारों को प्रमुख अतिथि एवं अन्य अतिथियों के हाथों पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। उक्त समारोह में कुल ३२४ जनों की सहभागिता रही।

"इबोला वायरस सम्बन्धी जानकारी"

इबोला वायरस से फैलने वाली बीमारी काफी खतरनाक एवं प्राण घातक है। १९७६ में कंगोको इबोला नदी के नजदीक चमगादड (BAT) के शरीर में इबोला वायरस पाये गये थे। हाल ही में वहां के लोगों में चमगादड या जंगली जानवरों के मांस से यह बीमारी फैलने का अनुमान लगाया जा रहा है। विशेष कर जंगली जानवरों का मांस खाने तथा जंगली जानवरों के साथ प्रत्यक्ष संपर्क में आने वाले लोगों में यह बीमारी फैल सकती है, ऐसा अनुमान है। इस बीमारी से संक्रमित जंगली जानवरों के मांस, रक्त आदि से यह वायरस लोगों में फैल सकता है। जैसे चिम्पांजी, गुरिल्ला, बंदर, सुअर, हिरण, साहिल आदि के अलावा सबसे ज्यादा चमगादडों से इस बीमारी के वायरस मनुष्यों में फैल सकते हैं।

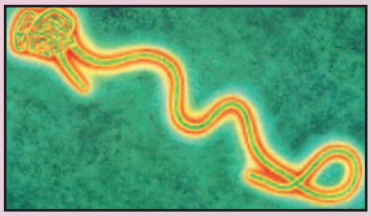

स्वास्थ्यकर्मी और रोगी के सम्पर्क में आने वाले के साथ ही इस रोग से मृत व्यक्ति के अंतिम संस्कार के समय भी शव के सम्पर्क में आने वाले लागों में भी इस बीमारी के वायरस का संक्रमण होने का खतरा बरकरार रहता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस बीमारी को विश्वव्यापी महामारी के रुप में घोषणा की है। तथा इबोला वायरस से पश्चिम अफ्रिका में अब तक करीब एक हजार से ज्यादा लोगों की जानें जा चुकी हैं।

चिकित्सकों के अनुसार इबोला वायरस संक्रमित व्यक्ति में २ दिन से २१ दिन तक इसके लक्षण दिखाई पड़ सकते हैं। यह वायरस संक्रमित जानवर या मनुष्य के शरीर से निकलने वाले रक्त, पसीना, पेशाब, पैखाना, थूक, कफ, लार, वीर्य सहित तरल पदार्थों द्वारा फैल सकते हैं। शरीर से निकलने वाले इस प्रकार के तरल पदार्थों में यह वायरस घंटों तक जीवित रह सकते हैं। इस प्रकार की खतरनाक प्राणघातक बीमारी के विश्वव्यापी फैलने की संभावना रहने के कारण सभी को सचेत, सजग रहकर हर प्रकार की सावधानी अपनाना आवश्यक है।

इबोला भाईरसका लक्षणहरु

इबोला संक्रमित व्यक्ति के साथ प्रत्यक्ष संपर्क होने पर २ से २१ दिनों में गला खस-खस करने, आंखें लाल होने, खांसी होने, सर दर्द करने, मांसपेशियों में दर्द होने, तेज बुखार आने आदि जैसे प्राथमिक लक्षण दिखाई पडते हैं, जिन्हें पहला चरण कहा जा सकता है।

दूसरे चरण में पेट दर्द, बेचैनी महसूस होने, उलटी होने, बार-बार पैखाना लगने, भूख न लगने, कमजोरी महसूस होने के साथ ही शरीर में विभिन्न प्रकार के चकते और लाल-लाल धब्बे दिखाई पडने लग जाते हैं। तीसरे चरण में श्वास-कष्ट, कलेजा, किडनी आदि काम करना बंद कर देता है और बीमार व्यक्ति का आंतरिक व बाह्य रक्तश्राव होकर मृत्यु हो जाती है।

इबोला भाईरसबाट बच्ने उपायहरु

१.संक्रमित व्यक्ति से प्रत्यक्ष सम्पर्क न करें, न उसे छूएं।
२.संक्रमित व्यक्ति द्वारा प्रयोग किये गये कपडे-लत्ते, खाद्य, बर्तन, वासन, बिछावन, शौचालय आदि का प्रयोग न करें।
३.बीमार या संक्रमित व्यक्ति से कम से कम एक मीटर दूर रहें तथा साफ-सफाई पर पूरा ध्यान दें।
४.संक्रमित क्षेत्र में आना-जाना न करें।
५.जंगली जानवरों के सम्पर्क में न आयें और जंगली जानवरों का मांस न खायें।
६.संक्रमित जानवरों व पशु-पक्षियों के शव को सावधानीपूर्वक दफनायें या जलाएं।
७.इबोला से संक्रमित होने की आशंका होने पर शीघ्र किसी से सम्पर्क कर चिकित्सा संस्थान में सम्पर्क करें।
८.उपचार में लगने वाले चिकित्सक व स्वास्थ्यकर्मी विशेष सावधानी का अवलंबन करें।
९.इबोला वायरस से मृत्यु होने पर शव का सावधानीपूर्वक व्यवस्थापन करें आदि।

साभार: विश्व स्वास्थ्य संगठन के होमपेज एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं स

वृक्षारोपण कार्यक्रम यूराशिया रेयूकाई १७वीं शाखा, सिद्धार्थनगर (नेपाल)।

ह्वील चेयर वितरण कार्यक्रम, यूराशिया रेयूकाई १८वीं शाखा, कालिम्पोंग (भारत)।

महिला मिलन कार्यक्रम, यूराशिया रेयूकाई २५वीं शाखा, काभ्रे (नेपाल)।

खदा बनाने का प्रशिक्षण, यूराशिया रेयूकाई २१वीं शाखा, सिलीगुडी (भारत)।

रक्तदान शिविर, समाज विकास केन्द्र, सानेपा (नेपाल)।

१८ अगस्त २०१४ का मासिक मिलन तथा तीज विशेष कार्यक्रम, २८वीं शाखा, भद्रपुर (नेपाल)।